श्री बाबा औघड़नाथ शिव मन्दिर, मेरठ

शिव स्तुति संग्रह

प्रकाशक : श्री बाबा औघड़नाथ शिव मन्दिर समिति (पंजी०)
मेरठ छावनी, दूरभाष : 0121-2665425

श्री दुर्गा शक्ति पीठम्

卐 ॐ श्री परमात्मने नमः 卐

शिव-स्तुति संग्रह

शिवाष्टक, रुद्राष्टक,
श्रीशिव-अष्टोत्तरशतनामावली
आरती सहित

-: प्रकाशक :- श्री बाबा औघड़नाथ शिव मन्दिर समिति (रजि०) काली पलटन, मेरठ छावनी। दूरभाष : 0121.2660425

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

गजाननं भूतगणादिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं, शोकविनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥

जो हाथी के समान मुख वाले हैं, भूतगणादि से सदा सेवित रहते हैं, कैथ तथा जामुन फल जिनके लिये प्रिय भोज्य है, पार्वती के पुत्र हैं तथा जो प्राणियों के शोक का विनाश करने वाले हैं, उस विघ्नेश्वर के चरणकमलों में नमस्कार करता हूँ ।

गाइये गनपति जगवंदन । शंकर-सुवन भवानी-नन्दन ॥
सिद्धि-सदन, गज-बदन, विनायक । कृपा सिन्धु, सुन्दर, सब लायक ॥
मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता । विद्या-वारिधि, बुद्धि विधाता ॥
मांगत तुलसिदास कर जोरे । बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥

मैं भवानी को आनन्दित करने वाले, भगवान् शंकर के पुत्र, सम्पूर्ण जगत के वन्दनीय, भगवान गणपति के गुणों को गाऊँ । हाथी के मुँह वाले भगवान् विनायक (गणेश) समस्त सिद्धियों के सदन (घर) हैं । कृपा के सिन्धु (सागर) हैं । परम सुन्दर हैं । सब प्रकार से लायक (योग्य) हैं । वे लड्डुओं को प्रेमपूर्वक खाने वाले हैं । प्रीति और मंगल के देने वाले हैं । विद्या के समुद्र हैं । बुद्धि को उत्पन्न करने वाले हैं । ऐसे भगवान् गणपति से तुलसीदास जी हाथ जोड़कर यही वर माँगते हैं कि सीता सहित श्री राम मेरे मन में सदा निवास करें ।

संकष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् । भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ॥ 1 ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् । तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ 2 ॥

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च । सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥ 3 ॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् । एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ 4 ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः । न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ॥ 5 ॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् । पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥ 6 ॥

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् । संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥ 7 ॥

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् । तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ 8 ॥

॥ इति श्रीनारदपुराणे श्रीसङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं,
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा,
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ 1 ॥
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ 2॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।

साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया,
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ 3 ॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ 4 ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥ 5 ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा सम्पूर्णा ॥

शिवाष्टक

जय शिव शंकर, जय गंगाधर, करुणाकर करतार हरे,
जय कैलाशी, जय अविनाशी, सुखराशी, सुखसार हरे,
जय शशि-शेखर, जय डमरु-धर, जय जय प्रेमागार हरे,
जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमित, अनन्त, अपार हरे,
निर्गुण जय जय, सगुण अनामय निराकार साकार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ १ ॥

जय रामेश्वर, जय नागेश्वर, वैद्यनाथ केदार हरे,
मल्लिकार्जुन, सोमनाथ जय, महाकाल ओंकार हरे,
त्र्यम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर जगतार हरे,
काशी-पति श्री विश्वनाथ जय, मंगलमय अघ हार हरे,

नील–कण्ठ जय, भूतनाथ जय, मृत्युञ्जय, अविकार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 2 ॥

जय महेश, जय जय भवेश, जय आदिदेव, महादेव विभो,
किस मुख से हे गुणातीत, प्रभु तव अपार गुण वर्णन हो,
जय भवकारक, तारक, हारक, पातक–दारक शिवशम्भो,
दीन दुःखहर, सर्व सुखाकर, प्रेम–सुधाधर दया करो,
पार लगा दो भवसागर से, बन कर कर्णाधार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 3 ॥

जय मनभावन, जय अतिपावन, शोक नशावन शिवशम्भो,
विपद विदारन, अधम उबारन, सत्य सनातन शिवशम्भो,
सहज वचनहर, जलज नयनवर, धवल–वरन–तन शिवशम्भो,
मदन–कदन–कर पाप–हरन–हर चरन–मनन–धन शिवशम्भो,

विवसन, विश्वरूप, प्रलयंकर, जग के मूलाधार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 4 ॥

भोलानाथ कृपालु दयामय, औढरदानी शिवयोगी,
निमिष मात्र में देते हैं, नव निधि मनमानी शिवयोगी,
सरल हृदय, अतिकरुणा सागर, अकथ-कहानी शिवयोगी,
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर, बने मसानी शिवयोगी,
स्वयं अकिंचन, जन मन रंजन, पर शिव परम उदार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 5 ॥

आशुतोष ! इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना,
विषम-वेदना से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना,

रूप-सुधा की एक बूँद से जीवन मुक्त बना देना,
दिव्य-ज्ञान-भण्डार-युगल-चरणों में लगन लगा देना,
एक बार इस मनमन्दिर में कीजे पद संचार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 6 ॥

दानी हो, दो भिक्षा में, अपनी अनपायनी भक्ति प्रभो,
शक्तिमान हो, दो अविचल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो,
त्यागी हो, दो इस असार-संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो,
परम पिता हो, दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो,
स्वामी हो, निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 7 ॥

तुम बिन 'बेकल' हूँ प्राणेश्वर, आ जाओ भगवन्त हरे,
चरण शरण की बाँह गहो, हे उमा-रमण प्रियकन्त हरे,
विरह-व्यथित हूँ, दीन दुःखी हूँ, दीन-दयालु अनन्त हरे,
आओ, तुम मेरे हो जाओ, आ जाओ श्रीमन्त हरे,
मेरी इस दयनीय दशा पर, कुछ तो करो विचार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 8 ॥

रचियता :- श्री केदारनाथ 'बेकल'

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च,
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

कल्याण एवं सुख के मूल स्रोत भगवान् शिव को नमस्कार है । कल्याण प्रदान करने वाले तथा सुख के विस्तार करने वाले भगवान् शिव को नमस्कार है । मंगलस्वरूप तथा मंगलमयता की सीमा भगवान् शिव को नमस्कार है ।

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥ 1 ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥ 2॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥ 3 ॥

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ 4॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥ 5 ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ 6॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं
भजंतीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥ 7 ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥ 8 ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ 9 ॥

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारे परमेश्वरम् ॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे, डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
वाराणस्यां च विश्वेशं, त्र्यम्बकं गौतमीतटे ॥
वैद्यनाथं चिताभूमौ, नागेशं दारुकावने ।
सेतुबन्धे च रामेशं, घुश्मेशं च शिवालये ॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलं लभेत् ॥
यं यं कामपेक्ष्यैव पठिष्यन्ति नरोत्तमाः ।
प्राप्स्यन्ति कामं तं तं हि परत्रेह मुनीश्वराः ॥

ये निष्कामतया तानि पठिष्यन्ति शुभाशयाः ।
तेषां च जननीगर्भे वासो नैव भविष्यति ।।

सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्रीशैल पर्वत पर मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी में महाकाल, ओंकार क्षेत्र में परमेश्वर, हिमालय के शिखर पर केदार, डाकिनी में भीमशंकर, वाराणसी में विश्वेश्वर, गौतमी नदी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर, चिताभूमि में वैद्यनाथ, दारुकवन में नागेश, सेतुबन्ध में रामेश्वर तथा शिवालय में घुश्मेश्वर (नामक ज्योतिर्लिंग) हैं । जो प्रतिदिन प्रातः काल उठकर इन बारह नामों का पाठ करता है, उसके सभी प्रकार के पाप छूट जाते हैं और वह सम्पूर्ण सिद्धियों के फल को प्राप्त कर लेता है । हे मुनीश्वरो ! उत्तम पुरुष जिस-जिस मनोरथ की अपेक्षा करके इन बारह नामों का पाठ करेंगे, वे उस-उस मनोकामना को इस लोक में तथा परलोक में अवश्य प्राप्त करेंगे । जो शुद्ध अन्तःकरण वाले पुरुष निष्कामभाव से इन नामों का पाठ करेंगे, उन्हें (पुनः) माता के गर्भ में निवास नहीं करना पड़ेगा।

(शिवपुराण, कोटिरुद्रसंहिता)

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ 1 ॥

मन्दाकिनी सलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।
मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥2॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द–
सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ 3 ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य–
मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ 4 ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ 5 ॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ 6 ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं-शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

जो शिव के समीप इस पवित्र पंचाक्षरस्तोत्र का पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता है और वहाँ शिवजी के साथ आनन्दित होता है ।6 ॥

॥ श्री शिवाय नमः ॥

श्रीशिव-अष्टोत्तरशतनामावलिः

1 ॐ शिवाय नमः ।
2 ॐ महेश्वराय नमः ।
3 ॐ शम्भवे नमः ।
4 ॐ पिनाकिने नमः ।
5 ॐ शशिशेखराय नमः ।
6 ॐ वामदेवाय नमः ।
7 ॐ विरूपाक्षाय नमः ।
8 ॐ कपर्दिने नमः ।
9 ॐ नीललोहिताय नमः ।
10 ॐ शङ्कराय नमः ।
11 ॐ शूलपाणिने नमः ।
12 ॐ खट्वाङ्गिने नमः ।
13 ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ।
14 ॐ शिपिविष्टाय नमः ।
15 ॐ अम्बिकानाथाय नमः ।
16 ॐ श्रीकण्ठाय नमः ।
17 ॐ भक्तवत्सलाय नमः ।
18 ॐ भवाय नमः ।
19 ॐ शर्वाय नमः ।
20 ॐ त्रिलोकेशाय नमः ।
21 ॐ शितिकण्ठाय नमः ।
22 ॐ शिवाप्रियाय नमः ।
23 ॐ उग्राय नमः ।
24 ॐ कपालिने नमः ।
25 ॐ कामारये नमः ।
26 ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ।
27 ॐ गङ्गाधराय नमः ।
28 ॐ ललाटाक्षाय नमः ।
29 ॐ कालकालाय नमः ।
30 ॐ कृपानिधये नमः ।

31 ॐ भीमाय नमः ।
32 ॐ परशुहस्ताय नमः ।
33 ॐ मृगपाणये नमः ।
34 ॐ जटाधराय नमः ।
35 ॐ कैलासवासिने नमः ।
36 ॐ कवचिने नमः ।
37 ॐ कठोराय नमः ।
38 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ।
39 ॐ वृषाङ्काय नमः ।
40 ॐ वृषभारूढाय नमः ।
41 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ।
42 ॐ सामप्रियाय नमः ।
43 ॐ स्वरमयाय नमः ।
44 ॐ त्रयीमूर्तये नमः ।
45 ॐ अनीश्वराय नमः ।
46 ॐ सर्वज्ञाय नमः ।
47 ॐ परमात्मने नमः ।
48 ॐ सोमसोचनाय नमः ।
49 ॐ सूर्यलोचनाय नमः ।
50 ॐ अग्निलोचनाय नमः ।
51 ॐ हविर्यज्ञमयाय नमः ।
52 ॐ सोमाय नमः ।
53 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ।
54 ॐ सदाशिवाय नमः ।
55 ॐ विश्वेश्वराय नमः ।
56 ॐ वीरभद्राय नमः ।
57 ॐ गणनाथाय नमः ।
58 ॐ प्रजापतये नमः ।
59 ॐ हिरण्यरेतसे नमः ।
60 ॐ दुर्धर्षाय नमः ।
61 ॐ गिरीशाय नमः ।
62 ॐ गिरिशाय नमः ।

63 ॐ अनघाय नमः ।
64 ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ।
65 ॐ गिरीशाय नमः ।
66 ॐ गिरिधन्विने नमः ।
67 ॐ गिरिप्रियाय नमः ।
68 ॐ कृत्तिवाससे नमः ।
69 ॐ पुरारातये नमः ।
70 ॐ भगवते नमः ।
71 ॐ प्रमथाधिपाय नमः ।
72 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ।
73 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ।
74 ॐ जगद्व्यापिने नमः ।
75 ॐ जगद्गुरवे नमः ।
76 ॐ व्योमकेशाय नमः ।
77 ॐ महासेनजनकाय नमः ।
78 ॐ चारुविक्रमाय नमः ।
79 ॐ रुद्राय नमः ।
80 ॐ भूतपतये नमः ।
81 ॐ स्थाणवे नमः ।
82 ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ।
83 ॐ दिगम्बराय नमः ।
84 ॐ अष्टमूर्तये नमः ।
85 ॐ अनेकात्मने नमः ।
86 ॐ सात्त्विकाय नमः ।
87 ॐ शुद्धविग्रहाय नमः ।
88 ॐ शाश्वताय नमः ।
89 ॐ खण्डपरशवे नमः ।
90 ॐ अजपाशविमोचकाय नमः ।
91 ॐ मृडाय नमः ।
92 ॐ पशुपतये नमः ।
93 ॐ देवाय नमः ।
94 ॐ महादेवाय नमः ।

95 ॐ अव्ययाय नमः ।
96 ॐ प्रभवे नमः ।
97 ॐ पुरुषोत्तमभिदे नमः ।
98 ॐ अक्षयाय नमः ।
99 ॐ पुरुषाभरहराय नमः ।
100 ॐ हराय नमः ।
101 ॐ भगनेत्रभिदे नमः ।
102 ॐ अव्यक्ताय नमः ।
103 ॐ सहस्राक्षाय नमः ।
104 ॐ सहस्रपादे नमः ।
105 ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ।
106 ॐ अनन्ताय नमः ।
107 ॐ तारकाय नमः ।
108 ॐ परमेश्वराय नमः ।

॥ इति श्रीशिवरहस्ये गौरीनारायणसंवादे शिवाष्टोत्तरशतदिव्यनामावलिः सम्पूर्णम् ॥

इस प्रकार भगवान शिव के दिव्य 108 नाम जो वेद के तुल्य है, श्रीविष्णु ने पहले इष्ट सिद्धि हेतु माता पार्वती जी को बतलाये थे । शंकरप्रिया भगवती गौरी ने भगवान् पद्मनाभ की प्रेरणा से एक वर्ष तक प्रतिदिन बिल्वपत्र इनका जप किया । त्रिशूलधारी की कृपा से उन्होंने इनका शरीरार्ध प्राप्त किया । इसका एक बार पाठ करने से वही फल प्राप्त होता है जो तीन बार शतरुद्री के पाठ करने से होता है । बिल्वपत्र अथवा फूल और तुलसीदल अथवा तिल तथा अक्षत से जो पूजा करते हैं वे जीवन मुक्त हो जाते हैं । भगवान् शंकर के इन शतनामों में से एक ही नाम मोक्ष देने वाला है तो शतनाम का महत्व (फल) वर्णनातीत है ।

प्रदोष व्रत की शास्त्रोक्त विधि

प्रदोष व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के प्रयोजन से प्रत्येक मास की कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षों में त्रयोदशी तिथि को किया जाता है। शिव पूजन और रात्रि भोजन के अनुरोध से इसे 'प्रदोष' कहते हैं। इसका समय सूर्यास्त से दो घड़ी रात बीतने तक (सूर्यास्त से 48 मिनट तक) है। जो मनुष्य प्रदोष के समय परमेश्वर शिव जी के चरण कमल का अनन्य मन से आश्रय लेता है उसके धन-धान्य, स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धव और शुभ-सम्पत्ति सदैव बढ़ते रहते हैं। यदि कृष्ण पक्ष में सोम और शुक्ल पक्ष में शनि हो तो उस प्रदोष का विशेष फल होता है। प्रदोष व्रत में प्रदोष व्यापिनी परविद्धा त्रयोदशी तिथि ली जाती है। इस दिन प्रातः स्नानादि करके 'अहं शिवप्रसादप्राप्तिकामनया प्रदोष व्रतम् करिष्ये' यह संकल्प करके दिनभर शिव का स्मरण रखे और सूर्यास्त से पहले पुनः स्नान करके शिवमूर्ति के सामीप्य पूर्व या उत्तर मुख होकर बैठे और हाथ में जल, फल, पुष्प और गन्धाक्षत लेकर 'अहं शिवप्रसादप्राप्तिकामनया प्रदोषव्रतांगीभूत शिव पूजनम् करिष्ये' यह संकल्प करके भाल पर भस्म का भव्य तिलक और गले में रुद्राक्ष की माला धारण करें। उत्तम प्रकार के गन्ध पुष्प और बिल्व-पत्रादि से उमा महेश्वर का शास्त्रोक्त पद्धति के अनुसार पूजन करें। प्रत्येक मास के सोमवार को शिवव्रत भी इसी प्रकार होता है।

यद्यपि प्रदोषव्रत प्रत्येक त्रयोदशी को होता है और इसके नियम आदि ऊपर लिखे जा चुके हैं तथापि कामना भेद से इसमें यह विशेषता है कि (1) यदि पुत्रप्राप्ति की कामना हो तो शुक्लपक्ष की जिस त्रयोदशी को शनिवार हो, उससे आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त या फल प्राप्त होने तक व्रत करें। (2) ऋण– मोचन की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को मंगलवार हो उससे प्रारम्भ करे (3) सौभाग्य और स्त्री की समृद्धि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को शुक्रवार हो उससे आरम्भ करें। (4) अभीष्ट सिद्धि की कामना या शान्ति रक्षा कामना हो तो जिस त्रयोदशी को सोमवार हो उससे आरम्भ करें और यदि (5) आयु आरोग्यादि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को रविवार हो उससे आरम्भ करके कामना पूर्ति तक करें।

भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमते।
रुद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने॥
उग्रायोऽग्राघनाशाय भीमाय भयहारिणे।
ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः॥

इस मंत्र से प्रार्थना करके भोजन करें।

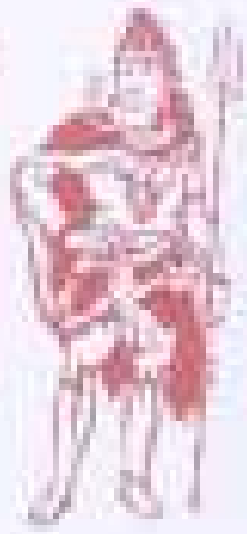

श्री सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच : देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी ।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ॥

शिवजी बोले– हे देवी ! तुम भक्तों के लिये सुलभ हो और समस्त कर्मों का विधान करने वाली हो । कलियुग में कामनाओं की सिद्धि-हेतु यदि कोई उपाय हो तो उसे अपनी वाणी द्वारा सम्यक्-रूप से बतलाओ ।

देव्युवाच : शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ॥

देवी ने कहा–हे देव ! आपका मेरे ऊपर बहुत स्नेह है । कलियुग में समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाला जो साधन है वह बतलाऊँगी, सुनिये । उसका नाम है 'अम्बास्तुति' ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः ।

ॐ इस दुर्गासप्तश्लोकी स्तोत्रमन्त्र के नारायण ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती देवता हैं, श्रीदुर्गा की प्रसन्नता के लिये सप्तश्लोकी दुर्गा पाठ में इसका विनियोग किया जाता है।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ 1 ॥

वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियों के भी चित्त को बलपूर्वक खींचकर मोह में डाल देती हैं ॥ 1 ॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ 2 ॥

माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, दरिद्रता और भय को हरने वाली देवी! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिये सदा ही दयाई रहता हो। ॥ 2 ॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ 3 ॥

नारायणि ! आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हैं, आप ही कल्याणदायिनी शिवा हैं, आप सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली गौरी हैं; आपको नमस्कार है ॥ 3 ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ 4 ॥

शरणागतों, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी ! आपको नमस्कार है । ॥ 4 ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवी दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ 5 ॥

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यस्वरूपा दुर्गे देवि ! सब भयों से हमारी रक्षा कीजिये, आपको नमस्कार है । ॥ 5 ॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ 6 ॥

देवि ! आप प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हैं और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हैं । जो लोग आपकी शरण में हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं; आपकी शरण में गये हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं । ॥ 6 ॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ 7 ॥

॥ इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ॥

सर्वेश्वरि ! आप इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करें और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहें । ॥ 7 ॥

॥ इस प्रकार श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्ण हुई ॥

श्रीदुर्गा-अष्टोत्तरशतनामावलिः

शंकरजी पार्वतीजी से कहते हैं– कमलानने ! अब मैं अष्टोत्तरशतनाम का वर्णन करता हूँ, सुनो: जिसके प्रसाद (पाठ या श्रवण)–मात्र से परम साध्वी भगवती दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं।

1 ॐ सत्यै नमः ।
2 ॐ साध्व्यै नमः ।
3 ॐ भवप्रीतायै नमः ।
4 ॐ भवान्यै नमः ।
5 ॐ भवमोचन्यै नमः ।
6 ॐ आर्यायै नमः ।
7 ॐ दुर्गायै नमः ।
8 ॐ जयायै नमः ।
9 ॐ आद्यायै नमः ।
10 ॐ त्रिनेत्रायै नमः ।
11 ॐ शूलधारिण्यै नमः ।
12 ॐ पिनाकधारिण्यै नमः ।
13 ॐ चित्रायै नमः ।
14 ॐ चण्डघण्टायै नमः ।
15 ॐ महातपसे नमः ।
16 ॐ मनसे नमः ।

17 ॐ बुद्ध्यै नमः ।

18 ॐ अहङ्कारायै नमः ।

19 ॐ चित्तरूपायै नमः ।

20 ॐ चितायै नमः ।

21 ॐ चित्यै नमः ।

22 ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः ।

23 ॐ सत्तायै नमः ।

24 ॐ सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः ।

25 ॐ अनन्तायै नमः ।

26 ॐ भाविन्यै नमः ।

27 ॐ भाव्यायै नमः ।

28 ॐ भव्यायै नमः ।

29 ॐ अभव्यायै नमः ।

30 ॐ सदागत्यै नमः ।

31 ॐ शाम्भव्यै नमः ।

32 ॐ देवमात्रे नमः ।

33 ॐ चिन्तायै नमः ।

34 ॐ रत्नप्रियायै नमः

35 ॐ सर्वविद्यायै नमः ।

36 ॐ दक्षकन्यायै नमः ।

37 ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः ।

38 ॐ अपर्णायै नमः ।

39 ॐ अनेकवर्णायै नमः ।

40 ॐ पाटलायै नमः ।

41 ॐ पाटलावत्यै नमः ।

42 ॐ पट्टाम्बरपरीधानायै नमः ।

43 ॐ कलमञ्जीररञ्जिन्यै नमः ।

44 ॐ अमेयविक्रमायै नमः ।

45 ॐ क्रूरायै नमः ।
46 ॐ सुन्दर्यै नमः ।
47 ॐ सुरसुन्दर्यै नमः ।
48 ॐ वनदुर्गायै नमः ।
49 ॐ मातङ्ग्यै नमः ।
50 ॐ मतङ्गमुनिपूजितायै नमः ।
51 ॐ ब्राह्म्यै नमः ।
52 ॐ माहेश्वर्यै नमः ।
53 ॐ ऐन्द्र्यै नमः ।
54 ॐ कौमार्यै नमः ।
55 ॐ वैष्णव्यै नमः ।
56 ॐ चामुण्डायै नमः ।
57 ॐ वाराह्यै नमः ।
58 ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
59 ॐ पुरुषाकृत्यै नमः ।
60 ॐ विमलायै नमः ।
61 ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ।
62 ॐ ज्ञानायै नमः ।
63 ॐ क्रियायै नमः ।
64 ॐ नित्यायै नमः ।
65 ॐ बुद्धिदायै नमः ।
66 ॐ बहुलायै नमः ।
67 ॐ बहुलप्रेमायै नमः ।
68 ॐ सर्ववाहनवाहनायै नमः ।
69 ॐ निशुम्भशुम्भहनन्यै नमः ।
70 ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः ।
71 ॐ मधुकैटभहन्त्र्यै नमः ।
72 ॐ चण्डमुण्डविनाशिन्यै नमः ।

73 ॐ सर्वासुरविनाशायै नमः ।
74 ॐ सर्वदानवघातिन्यै नमः ।
75 ॐ सर्वशास्त्रमय्यै नमः ।
76 ॐ सत्यायै नमः ।
77 ॐ सर्वास्त्रधारिण्यै नमः ।
78 ॐ अनेकशस्त्रहस्तायै नमः ।
79 ॐ अनेकास्त्रधारिण्यै नमः ।
80 ॐ कुमार्यै नमः ।
81 ॐ एककन्यायै नमः ।
82 ॐ कैशोर्यै नमः ।
83 ॐ युवत्यै नमः ।
84 ॐ यत्यै नमः ।
85 ॐ अप्रौढायै नमः ।
86 ॐ प्रौढायै नमः ।
87 ॐ वृद्धमात्रे नमः ।
88 ॐ बलप्रदायै नमः ।
89 ॐ महोदर्यै नमः ।
90 ॐ मुक्तकेश्यै नमः ।
91 ॐ घोररूपायै नमः ।
92 ॐ महाबलायै नमः ।
93 ॐ अग्निज्वालायै नमः ।
94 ॐ रौद्रमुख्यै नमः ।
95 ॐ कालरात्र्यै नमः ।
96 ॐ तपस्विन्यै नमः ।
97 ॐ नारायण्यै नमः ।
98 ॐ भद्रकाल्यै नमः ।
99 ॐ विष्णुमायायै नमः ।
100 ॐ जलोदर्यै नमः ।

101 ॐ शिवदूत्यै नमः ।

102 ॐ कराल्यै नमः ।

103 ॐ अनन्तायै नमः ।

104 ॐ परमेश्वर्यै नमः ।

105 ॐ कात्यायन्यै नमः ।

106 ॐ सावित्र्यै नमः ।

107 ॐ प्रत्यक्षायै नमः ।

108 ॐ ब्रह्मवादिन्यै नमः ।

देवी पार्वती ! जो प्रतिदिन दुर्गाजी के इस अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है । वह धन, धान्य, पुत्र, स्त्री, घोड़ा, हाथी, धर्म आदि चार पुरुषार्थ तथा अन्त में सनातन मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है । कुमारी का पूजन और देवी सुरेश्वरी का ध्यान करके पराभक्ति के साथ उनका पूजन करें फिर अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करें । देवि ! जो ऐसा करता है, उसे सब श्रेष्ठ देवताओं से भी सिद्धि प्राप्त होती है । राजा उसके दास हो जाते हैं । वह राज्यलक्ष्मी प्राप्त कर लेता है। गोरोचन, लाक्षा, कुंकुम, सिन्दूर, कपूर, घी (अथवा दूध), चीनी और मधु–इन वस्तुओं को एकत्र करके इनसे विधिपूर्वक यन्त्र लिखकर जो विधिज्ञ पुरुष सदा उस यन्त्र को धारण करता है, वह शिव के तुल्य (मोक्षरूप) हो जाता है । भौमवती अमावस्या की आधी रात में, जब चन्द्रमा शतभिषा नक्षत्र पर हों, उस समय इस स्तोत्र को लिखकर जो इसका पाठ करता है, वह सम्पत्तिशाली होता है ।

॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

एक समय की बात है, ब्रह्मा आदि देवताओं ने पुष्प आदि विविध उपचारों से महेश्वरी दुर्गा का पूजन किया। इससे प्रसन्न होकर दुर्गतिनाशिनी दुर्गा ने कहा—'देवताओ! मैं तुम्हारे पूजन से संतुष्ट हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो, माँगो, मैं तुम्हें दुर्लभ-से-दुर्लभ वस्तु भी प्रदान करूँगी।' दुर्गा का यह वचन सुनकर देवता बोले—'देवी! हमारे शत्रु महिषासुर को, जो तीनों लोकों के लिये कंटक था, आपने मार डाला, इससे सम्पूर्ण जगत् स्वस्थ एवं निर्भय हो गया। आपकी ही कृपा से हमें पुनः अपने-अपने पद की प्राप्ति हुई है। इसलिये हम जगत की रक्षा के लिये आपसे कुछ पूछना चाहते हैं। महेश्वरि! कौन-सा ऐसा उपाय है, जिससे शीघ्र प्रसन्न होकर आप संकट में पड़े हुए जीव की रक्षा करती हैं। देवेश्वरि! यह बात सर्वथा गोपनीय हो तो भी हमें अवश्य बतावें।'

दुर्गादेवी ने कहा—'देवगण! सुनो—यह रहस्य अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है। मेरे बत्तीस नामों की माला सब प्रकार की आपत्ति का विनाश करने वाली है। तीनों लोकों में इसके समान दूसरी कोई स्तुति नहीं है। यह रहस्यरूप है। इसे बतलाती हूँ, सुनो—

1 दुर्गा,
2 दुर्गार्तिशमनी,
3 दुर्गापद्विनिवारिणी,
4 दुर्गमच्छेदिनी,
5 दुर्गसाधिनी,
6 दुर्गनाशिनी,
7 दुर्गतोद्धारिणी,
8 दुर्गनिहन्त्री,
9 दुर्गमापहा,
10 दुर्गमज्ञानदा,
11 दुर्गदैत्यलोकदवानला,
12 दुर्गमा,
13 दुर्गमालोका,
14 दुर्गमात्मस्वरूपिणी,
15 दुर्गमार्गप्रदा,
16 दुर्गमविद्या,
17 दुर्गमाश्रिता,
18 दुर्गमज्ञानसंस्थाना,
19 दुर्गमध्यानभासिनी,
20 दुर्गमोहा,
21 दुर्गमगा,
22 दुर्गमार्थस्वरूपिणी,
23 दुर्गमासुरसंहन्त्री,
24 दुर्गमायुधधारिणी,
25 दुर्गमाङ्गी,
26 दुर्गमता,
27 दुर्गम्या,
28 दुर्गमेश्वरी,
29 दुर्गभीमा,
30 दुर्गभामा,
31 दुर्गभा,
32 दुर्गदारिणी ।

जो मनुष्य मुझ दुर्गा की इस नाम माला का पाठ करता है, वह निःसन्देह सब प्रकार के भय से मुक्त हो जायेगा ।

गणेश जी की आरती

ॐ गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारणम् नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥

ॐ जय गणपति देवो प्रभु जय गणपति देवो ।
आरती कीजे तुम्हारी तिन को वर देवो ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

ऋद्धि देवो सिद्धि देवो अष्ट नौनिधि देवो ।
भक्ति करनी तुम्हारी, तिनको वर देवो ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

लंबोदर पद्म सिंहासन सोहे ।
नारद से मुनिध्यावे, जिनको यश देवो ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

देवीसुत गणेश वर कंचन सोहे ।
मस्तक तिलक विराजे चन्द्र वदन सोहे ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

चारहूँ वेद उच्चारण चतुर्भुजी देवो,
भय हरता जग रचता, निर्धन धन देवो ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

मूषक वाहन जिनको, निर्गुणगुण देवो ।
भक्ति करनी तुम्हरी पार करो खेवो ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

काशी में विश्वनाथ विराजे, नन्दू ब्रह्मचारी,
नित्य उठि भोग लगावे, प्रभुजी के दर्शन पावे, महिमा अति भारी ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

श्री गणपति जी की आरती जो कोई नर गावें । प्रभु प्रेम सहित गावें ।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावें ॥

ॐ जय गणपति देवो ॥ टेक ॥

॥ श्री शिव जी की आरती ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥

जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥1॥ ॐ हर हर हर महादेव

एकानन चतुरानन पंचानन राजै । भोले पंचानन राजै ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ॥2॥ ॐ हर हर हर महादेव

दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहे । भोले दशभुज ते सोहे
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे ॥3॥ ॐ हर हर हर महादेव

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी । भोले मुण्डमाला धारी
चन्दन मृगमद लेपन भोले शशिधारी ॥4॥ ॐ हर हर हर महादेव

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे । भोले बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥5॥ ॐ हर हर हर महादेव

हर मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता । भोले चक्र त्रिशूल धर्ता ।
जग हरता जग रचता जग पालन कर्ता ॥ 6 ॥ ॐ हर हर हर महादेव
वागेश्वर कमलेश्वर भोलेश्वर देवा । भोले भोलेश्वर देवा ।
भक्तन के उपकारन जटा बिसर गंगा ॥ 7 ॥ ॐ हर हर हर महादेव
लक्ष्मीवर सावित्री पार्वती संगे । भोले पार्वती संगे ।
अर्द्धांगी गौरांगी शिव गौरा संगे ॥ 8 ॥ ॐ हर हर हर महादेव
काशी में विश्वनाथ विराजे नन्दु ब्रह्मचारी । भोले नन्दु ब्रह्मचारी
नित्यउ भोग लगावें बाबाजी के दर्शन पावें, महिमा अति भारी ॥ 9 ॥
ॐ हर हर हर महादेव
ब्रह्मा–विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । भोले जानत अविवेका ।
ओंकारश्वर मध्ये ये तीनों एका ॥ 10 ॥ ॐ हर हर हर महादेव
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे । भोले प्रेम सहित गावे ।
कहत 'शिवानन्द' स्वामी मनवाछित फल पावे ॥ 11 ॥ ॐ हर हर हर महादेव

॥ माता पार्वती जी की आरती ॥

ॐ जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय मंगल मूर्ति,
मैया जय आनन्द करनी, मैया जय संकट हरनी .....
तुमको निशिदिन ध्यावे हरि ब्रह्मा शिव जी ॥ 1 ॥ जय अम्बे...

माँग सिन्दूर विराजे, टीको मृगमद को ।
उज्जवल से दोऊ नैना, चंद्र बदन नीको ॥ 2 ॥ जय अम्बे...

देवी कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे ।
रक्त–पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ 3 ॥ जय अम्बे...

देवी केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर–नर–मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ 4 ॥ जय अम्बे...

देवी कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, निर्मल सम ज्योति ॥ 5 ॥ जय अम्बे...

देवी शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती ।
धूम्रविलोचनी नैना, निशिदिन मदमाती ॥ 6 ॥ जय अम्बे...
देवी चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरव ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ॥ 7 ॥ जय अम्बे...
देवी भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्पर धारी ।
मनवाञ्छित फल पावे सेवत नर-नारी ॥ 8 ॥ जय अम्बे ...
देवी तुम शङ्खाणी, तुम ब्रह्माणी, तुम कमला रानी ॥
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ 9 ॥ जय अम्बे...
कञ्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥ 10 ॥ जय अम्बे....
काशी मे विश्वनाथ विराजे, नन्दू ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावें, महिमा अति भारी ॥ 11 ॥ जय अम्बे...
(श्री) अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वाञ्छित फल पावे ॥ 12 ॥ जय अम्बे...

॥ श्री हनुमानजी की आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥ टेक ॥
जाके बल से गिरवर काँपे, भूत पिशाच निकट नही आवें ॥
अन्जनि पुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाए ॥
लंका-सी कोट समुद्र-सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छित भये धरनी पर, लाय सजीवन प्रान उबारे ॥
पैठि पाताल तोरि जमकातुर, अहिरावण की भुजा उखारे ॥
बायें भुजा सब असुर संहारे, दाहिने भुजा सब संत उबारे ॥
सुर नर मुनिजन आरती उतारें, जय जय जय हनुमान उचारें ॥
कंचन थार कपूर की बाती, आरती करत अंजनी माई ॥
जो हनुमान जी की आरती गावै, बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ॥
लंका विध्वंस किये रघुराई, 'तुलसीदास' प्रभु आरती गाई ॥

॥ श्री तुलसी जी की आरती ॥

तुलसा महारानी नमो नमो, हरि की पटरानी नमो नमो ।

धनी तुलसा पूरन तप कीन्हो मैया, शालिग्राम भई पटरानी । (नमो-2)

जाके वृक्ष मंजरी कोमल मैया, श्री पदचरण कमल लपटानी । (नमो-2)

धूप दीप नैवेद्य आरती मैया, पुष्पों की वर्षा बरसानी । (नमो-2)

छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन मैया, बिन तुलसा हर एक न मानी । (नमो-2)

सगरी सखी तुम्हरे यश गावे मैया, भक्तिदान दीजो महारानी । (नमो-2)

साधु संत तुम्हारो यश गावे मैया, खोजत फिरत महामुनि ज्ञानी । (नमो-2)

सोने का दिवला कपूर की बाती, तुलसाजी की ज्योति जले सारी राति । (नमो-2)

जो जन शरण तुम्हारी आवे मैया, बसें बैकुण्ठ परम पद पावे । (नमो-2)

जो तुलसा जी की आरती गावे मैया, मन इच्छा पूरण फल पावे मैया । (नमो-2)

॥ पुष्पांजलि ॥

ॐ नमो काशी वासी, अमिट अविनाशी प्रभु नमो ।
नमो निवासी कैलाशी, सकल सुख राशि प्रभु नमो ।
महायोग अभ्यासी, सकल घट वासी प्रभु नमो ।
पापो के नाशी त्रिनयन, अविकारी प्रभु नमो ।
कैलाशी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुध लीजो ।
सेवक जान सदा चरनन को, अपना जान कृपा कीजो ।
काल हरो, कष्टहरो, दुख दारिद्र हरो ।
ॐ नमामि शंकर, भवानी शंकर, हर हर शंकर तव शरणम् ॥

॥ श्री विष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रम ॥

अर्जुन उवाच : किं नु नाम सहस्राणि जपते च पुनः पुनः ।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशव ॥ 1 ॥

अर्जुन ने पूछा– केशव ! मनुष्य बार-बार एक हजार नामों का जप क्यों करता है ? आपके जो दिव्य नाम हों, उनका वर्णन कीजिये ॥ 1 ॥

श्रीभगवानुवाच : मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम् ।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ॥ 2 ॥
पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालिं हलायुधम् ।
गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम् ॥ 3 ॥
विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम् ।
दामोदरं श्रीधरं च वेदाङ्गं गरुडध्वजम् ॥ 4 ॥
अनन्तं कृष्णगोपालं जपतो नास्ति पातकम् ।
गवां कोटिप्रदानस्य अश्वमेधशतस्य च ॥ 5 ॥

कन्याशतसहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः ।
अमायां वा पौर्णमास्यामेकादश्यां तथैव च ॥ 6 ॥
सन्ध्याकाले स्मरेन्नित्यं प्रातःकाले तथैव च ।
मध्याह्ने च जपन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ 7 ॥

इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीविष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीभगवान् बोले—अर्जुन ! मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, जनार्दन, गोविन्द, पुण्डरीकाक्ष, माधव, मधुसूदन, पद्मनाभ, अजेन्द्राक्ष, वनमाली, हलायुध, गोवर्धन, हृषीकेश, वैकुण्ठ, पुरुषोत्तम, विश्वरूप, वासुदेव, राम, नारायण, हरि, दामोदर, श्रीधर, वेदाङ्ग, गरुडध्वज, अनन्त और कृष्णगोपाल- इन नामों का जप करने वाले मनुष्य के भीतर पाप नहीं रहता । वह एक करोड़ गो-दान, एक सौ अश्वमेधयज्ञ और एक हजार कन्यादान का फल प्राप्त करता है । अमावस्या, पूर्णिमा तथा एकादशी तिथि को और प्रतिदिन सायं-प्रातः एवं मध्याह्न के समय इन नामों का स्मरणपूर्वक जप करने वाला पुरुष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है ।

॥ आरती भगवान् राधा-कृष्ण जी की ॥

ॐ जय राधा कृष्ण हरे, प्रभु जय राधा कृष्ण हरे ॥
भक्त जनों के संकट, छिनमें दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मनका ॥ प्रभु ॥
सुख सम्पति घर आवै, कष्ट मिटे तनका ॥ ॐ ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन–कर्ता ॥ प्रभु ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥
किस विधि मिलूँ दयामय ! तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्रभु ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ॐ ॥

प्रार्थना

हे शिव! मैं आपका दास हूँ, यही मुझे आपके चरणों में नित्य निवेदन करना है। आप भी इस बात को जानते ही हैं कि मैं असहाय होकर इधर-उधर भटक रहा हूँ। बस आपसे और कुछ नहीं माँगता, केवल इतनी ही प्रार्थना है कि आप मुझ दीन को अकारण करुणा का कणमात्र प्रदान कर सदा के लिए अपनी शरण में ले लें।

अन्त में दीन वत्सल अकारण करुणावरुणालय प्रभु के श्री चरणों में यह निवेदन है कि- 'हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कान और आँख आदि शारीरिक अवयवों से, कर्म से तथा मानसिक रूप से भी विहित या अविहित, कुछ भी कोई अपराध मेरे द्वारा बन गया हो तो हे करुणा सागर उन सबको आप कृपापूर्वक क्षमा कर अपना लें। महादेव! सदाशिव! आपकी सदा जय हो।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा, श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥

मन्दिर की प्रबन्धकारिणी समिति

डा० महेश कुमार बंसल — अध्यक्ष

श्री अतुल कुमार अग्रवाल — कोषाध्यक्ष

श्री सतीश कुमार सिंघल — महामन्त्री

नाम	पद	नाम	पद
1. श्री धीरेन्द्र कुमार सिंघल	उपाध्यक्ष	12. महेन्द्र कुमार गुप्ता	सदस्य कार्यकारिणी
2. अजय बंसल	उपाध्यक्ष	13. भगवत दयाल बंसल	सदस्य कार्यकारिणी
3. सुनील कुमार गोयल	मन्त्री	14. संजय बंसल	सदस्य कार्यकारिणी
4. सुधीर कुमार अग्रवाल	उप-मन्त्री	15. ज्ञानेन्द्र अग्रवाल	सदस्य कार्यकारिणी
5. अनिल सिंघल	भण्डारी	16. कैलाश चन्द्र बंसल	सदस्य कार्यकारिणी
6. अमित अग्रवाल	सह-भण्डारी	17. पुलकित गुप्ता	सदस्य कार्यकारिणी
7. अशोक कुमार चौधरी	सदस्य कार्यकारिणी	18. अजय भार्गव	सदस्य कार्यकारिणी
8. राजेन्द्र कुमार गुप्ता	सदस्य कार्यकारिणी	19. अमरीश अग्रवाल	सदस्य कार्यकारिणी
9. राम जीवन गोयल	सदस्य कार्यकारिणी	20. रामनिवास अग्रवाल	सदस्य कार्यकारिणी
10. सुधीर कुमार गुप्ता	सदस्य कार्यकारिणी	21. मुकेश गुप्ता	सदस्य कार्यकारिणी
11. ब्रजभूषण गुप्ता	सदस्य कार्यकारिणी	22. मनोज कुमार	सदस्य कार्यकारिणी

मुद्रक : के पी० डिस्ट्रीब्यूटर्स 'रघुवा भाग' 154, जलीकाड़ा मेरठ । 0121-2402390, 2422552

सेवा द्वारा :

मीनाक्षी ज्वैल पैलेस

सर्राफा बाजार, मेरठ शहर । फोन : 0121-2516482, 9286616777